हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)
लोंग माउंटेन – मॉरीशस

NEWSLETTER

Website : hindipracharinisabha.com --- E.Mail: hindipracharinisabha@hotmail.com

वर्ष 8 अंक 19 मई 2016 | संपादक / टंकन / सज्जा : यंतुदेव बुधु | भाषा गई तो संस्कृति गई

सम्पादकीय

क्या संस्कृत केवल पूजा-पाठ की भाषा तक सीमित रहेगी?

संस्कृत देव वाणी कहलाती है । अधिकांश हिन्दू धर्म ग्रन्थों की भाषा भी संस्कृत रही है । वेद, उपनिषद, दर्शनशास्त्र, भगवद् गीता, रामायण, महाभारत आदि सभी संस्कृत में ही रचे गए हैं । हमारे दैनिक संध्या-वन्दन, पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन, भजन, स्वस्तिवाचन, संकल्प तथा उपनयन विवाहादि संस्कारों में संस्कृत का ही वर्चस्व है । तो क्या संस्कृत केवल पूजा-पाठ की भाषा बनी रहेगी ? आज संस्कृत भाषा और साहित्य बढ़ाने का कोई समुचित प्रबन्ध नहीं है ।

हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित प्रवेशिका से उत्तमा तक की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में आंशिक रूप से संस्कृत सम्मिलित है । मॉरीशस में आयोजित संस्कृत की पढ़ाई 1960 से हिन्दू महा सभा द्वारा शुरू हुई । 1962 से ब्राहमण महा सभा भी संस्कृत की परीक्षाएँ आयोजित करती है जो भारतीय विद्या भवन द्वारा संचालित होती है । 1970 से देश में सनातन धर्म मंदिर परिषद द्वारा भगवद् गीता और रामायण आदि पर आधारित संस्कृत परीक्षाएँ होती हैं । साथ में मॉरीशस आर्य सभा भी संस्कृत-शिक्षण के लिए प्रयत्नशील है ।

हिंदी संगठन के बाद कई और संगठन बने पर संस्कृत संगठन का क्या हुआ ? आज तक संस्कृत संगठन क्यों नहीं बन पाया ? कहाँ हैं बड़ी-बड़ी बातें करनेवाले बड़े-बड़े हिन्दू नेता ? संस्कृत की ये सभी संस्थाएँ क्यों मौन हैं ? अध्यक्ष-पद पाने के लिए जाने कितने लोग कब से तैयार बैठे हैं । पर कोई भी संस्था इसकी माँग क्यों नहीं कर रही ?

हम सरकार से यह माँग करते हैं कि नौ वर्षीय शिक्षा में संस्कृत को भी जगह दी जाए । महात्मा गांधी संस्थान में संस्कृत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का प्रावधान है । पर माध्यमिक स्कूल में इसे जगह मिले ऐसी हम कामना करते हैं । इससे संस्कृत की पढ़ाई को गति मिलेगी ।

निस्संदेह संस्कृत एक महत्वपूर्ण भाषा है और यह आज भी जीवित है । संस्कृत को हम आगे बढ़ाना चाहते हैं ताकि इस भाषा को जो सम्मानचाहिए इसे प्राप्त हो ।♦

यंतुदेव बुधु
प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

श्रद्धांजलि

श्री अजामिल माताबदल अब नहीं रहे ।

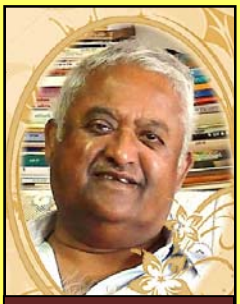

10.09.1945 – 14.03.2016

श्री अजामिल माताबदल अब नहीं रहे । 14 मार्च 2016 को वे 71 की उम्र में वे स्वर्ग सिधार गए । वे वर्षों तक हिंदी भाषा की सेवा करते रहे । वे एक साथ कई हिंदी संस्थाओं से जुड़े रहे । हिंदी प्रचारिणी सभा तथा हिंदी संगठन के प्रधान रह चुके हैं । विश्व हिंदी सचिवालय के शासी परिषद के सदस्य भी रहे ।

आप पच्चीस वर्षों तक हिंदी प्रचारिणी सभा की अध्यक्षता पद पर आसीन रहे । इस दौरान 23 वर्षों तक सभा की ओर से निकलने वाली 'पंकज' पत्रिका के मुख्य संपादक रहे । आपने 'पंकज' के कई विशेषांक भी प्रकाशित करवाए हैं । इसके साथ-साथ लेखन से जुड़े रहे और आपने 'सुस्मिता', 'दुर्गा ', आदि पुस्तकों को सभा द्वारा प्रकाशित किया । 'सुगम हिंदी' 1-6 तक की रचना में तथा प्रवेशिका कक्षा की पाठ्य पुस्तकें तैयार करने में आपका भारी सहयोग रहा ।

आपको कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए हैं । गत वर्ष दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन में आपको 'विश्व हिंदी सम्मान' से विभूषित किया गया । आप देश-विदेश के हिंदी सम्मेलनों में कई बार आलेख प्रस्तुत कर चुके हैं । आप हिंदी के विद्वान के रूप में केवल मॉरीशस में ही नहीं बल्कि भारत में भी विख्यात हुए हैं ।

2 अप्रैल 2016 को हिंदी भवन में माताबदल जी को श्रद्धांजलि प्रस्तुत करने के लिए एक शोक सभा लगाई गई जिसमें मॉरीशस के कई महा-नुभाव उपस्थित थे । उस अवसर पर हिंदी प्रचारिणी सभा के समिति कक्ष को "श्री अजामिल माताबदल कक्ष " नाम दिया गया तथा वहाँ एक "नाम-पट" भी लगाया गया । आपकी की हुई हिंदी-सेवा को लोग ज़रूर याद रखेंगे ।

सभा अजामिल माताबदल जी के परिवार को सांत्वना देते हुए उनकी सद्गति के लिए प्रार्थना करती है । ♦

सभा का बृहद अधिवेशन तथा चुनाव

हिंदी प्रचारिणी सभा का वार्षिक अधिवेशन तारीख 26 मार्च 2016 को सभा के सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में दिन के बारह बजे शुरू हुआ । अधिवेशन के पश्चात चुनाव आयोग द्वारा कार्यकारिणी समिति के 12 सदस्यों का चुनाव हुआ । चुनाव 1.30 बजे शुरू हुआ और चुनाव के बाद वोट गिनने की प्रक्रिया हुई तथा नतीजा घोषित किया गया । कार्यकाल 2016–2018 तक के लिए नई समिति का भी गठन हुआ । कुल 15 उम्मीदवार चुनाव के लिए खड़े हुए । उनके नाम और प्राप्त वोट तथा नई कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के नाम इस प्रकार है :–

	नाम		प्राप्त वोट
1.	अजुदिया	द्रवेन्द्रकुमार	20
2.	बुधु	यंतुदेव	49
3.	गिरधारी	हनुमान दूबे	51
4.	गिरधरराय	तारकेश्वरनाथ	32
5.	गंगाराम	जयमुन्ती	40
6.	लालबिहारी	जयचन्द	36
7.	मधु	रामकिसुन	46
8.	प्रोआग	जयचन्द्र परसाद	43
9.	रामदीन	टहल	48
10.	रामजतन	घनश्याम	38
11.	रामरूप	रोहिणी	56
12.	रघुबर	कामिनी	52
13.	सिरतन	तोमावती	30
14.	शम्भु	धनराज	57
15.	श्रीकिसुन	मोहन	46

वर्तमान कार्यकारिणी समिति के सदस्य (2016–2018)

मान्य प्रधान	श्री बृजलाल धनपत	
प्रधान	बुधु	यंतुदेव
उप–प्रधान	श्रीकिसुन	मोहन
मंत्री	शम्भु	धनराज
उप–मंत्री	रघुबर	कामिनी
कोषाध्यक्ष	रामदीन	टहल
उप–कोषाध्यक्ष	मधु	रामकिसुन
सदस्य :	गिरधारी	हनुमान दूबे
	रामजतन	घनश्याम
	रामरूप	रोहिणी
	गंगाराम	जयमुन्ती
	प्रोआग	जयचन्द्र परसाद
	लालबिहारी	जयचन्द

हम निर्वाचित सदस्यों को बधाई देते हैं तथा सभा का कार्य सुचारु रूप से हो ऐसी हम कामना करते हैं । साथ में अधिवेशन में भाग लेने तथा वोट डालनेवाले सदस्यों को हम सभा की ओर से आभार प्रकट करते हैं । सभा के कार्यों में आप सबका सहयोग मिले ऐसी हम आशा करते हैं ।

सभा के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए दो अलग उप–समितियों का गठन हुआ है :–

शिक्षा उप–समिति

1.	रामरूप	रोहिणी
2.	श्रीकिसुन	मोहन
3.	रघुबर	कामिनी
4.	गिरधारी	हनुमान दूबे
5.	लालबिहारी	जयचन्द
6.	महावीर	नरोतम

प्रकाशन उप–समिति

1.	श्रीकिसुन	मोहन
2.	मधु	रामकिसुन
3.	प्रोआग	जयचन्द्र परसाद
4.	रामजतन	घनश्याम
5.	गिरधारी	हनुमान दूबे
6.	सुखलाल	गुलशन

"भाषा, भाव–प्रवाह की संवाहिका है । विश्व की सभी भाषाओं मे हिंदी का विशेष स्थान है, क्योंकि यह विश्व के प्रथम ग्रंथ वेद के सूत्रों को वेद भाषा संस्कृत द्वारा प्रवाहित करते हुए असंख्य जनों के बीच बोलती, समझाती और सिखाती जाती पीढ़ी–दर–पीढ़ी सहज होती जा रही भाषा है ।" – डॉ. मृदुला सिन्हा

रामसेतु – सत्य या कल्पना ?

रामसेतु कभी भी हमारे सामूहिक कल्पना से दूर नहीं हुआ । क्या यह सच है कि भारत और लंका के बीच समुद्र के नीचे एक पुल है ? क्या वह सृष्टि का चमत्कार है या उसे मनुष्य के हाथों ने रूप दिया ? क्या वास्तविक तौर पर उस पुल को राम की वानर सेना ने, पत्थर दर पत्थर रखकर तैयार किया था ?

रामसेतु का चित्र नासा ने 14 दिसम्बर 1966 को जेमिनी –11 द्वारा अंतरिक्ष से प्राप्त किया था । इसके 22 साल बाद आई. एस. एस. 1 ए ने तमिल–नाडु पर स्थित रामेश्वरम और जाफना द्वीप के बीच समुद्र के भीतर भूमि–भाग का पता लगाया और उसका चित्र लिया । इससे अमेरिकी उपग्रह के चित्र की पुष्टि हुई ।

भारत के दक्षिणपूर्व में रामेश्वरम और श्रीलंका के पूवाईत्तर में मन्नार द्वीप के बीच उथली चट्टानों की एक चेन है । समुद्र में इन चट्टानों की गहराई सिर्फ 3 फुट से लेकर 30 फुट के बीच है । इस पुल की लंबाई लगभग48 किलोमीटर है । यह ढाँचा मन्नार की खाड़ी और पाक जलडमरू मध्य को एक दूसरे से अलग करता है । इस इलाके में समुद्र बेहद उथला है ।

रामसेतु पर कई खोज हुए हैं । कहा जाता है कि 15वीं शताब्दी तक इस पुल पर चलकर रामेश्वरम से मन्नार द्वीप तक जाया जा सकता था, लेकिन तूफानों ने यहाँ समुद्र को कुछ गहरा कर दिया । 1480 ईस्वी में यहचक्रवात के कारण टूट गया और समुद्र का जल स्तर बढ़ने के कारण यह डूब गया ।

प्राचीन काल से ही इस पुल जैसे भू–भाग को राम का पुल या रामसेतु कहा जाता था । लेकिन श्रीलंका के मुसलमानों ने इसे आदम पुल कहना शुरू किया । फिर ईसाई या पश्चिमी लोग इसे एडम ब्रिज कहने लगे । दोनों धर्मों के अनुसार 'आदम' इस पुल से होकर गुज़रे थे । ♦

(प्रभासाक्षी से साभार)

स्पीच थैरापी के लिए संस्कृत सबसे उपयुक्त भाषा !

संस्कृत भारती के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. पी. नंदकुमार का मानना है स्पीच थैरापी के लिए संस्कृत सबसे उपयुक्त भाषा है ।

डॉ. पी. नंदकुमार

जो व्यक्ति धाराप्रवाह बोल नहीं पाते, अटकते हैं या फिर हकलाते हैं उन्हें संस्कृत भाषा सीखनी चाहिए । जो बच्चे स्पष्ट बोलने में असमर्थ हैं, वे संस्कृत श्लोक एवं मंत्रों के सतत अभ्यास से बोलना शुरू कर सकते हैं ।

वेबदुनिया से विशेष बातचीत में नंदकुमार ने कहा कि वर्तमान में उत्तम उच्चारण के लिए अमेरिका में फिल्म कलाकार संस्कृत का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं ।

संस्कृत संभाषण से हकलाना भी खत्म हो जाता है । संस्कृत में हर अक्षर का कैसे उच्चारण करना है, इसका अलग शास्त्र है । मंत्र, श्लोक आदि के उच्चारण से मन, बुद्धि पवित्र होते हैं और मनुष्य आरोग्य को प्राप्त होता है । अर्थात वाणी की शुद्धता, उच्चारण की शुद्धता से मनुष्य शुद्ध बोलता है, यही शुद्ध वाणी, मन और शरीर को शुद्ध करती है और आरोग्य भी देती है । ♦

(वेबदुनिया से साभार)

सभा द्वारा विजेताओं के लिए निर्धारित वार्षिक पुरस्कार

परीक्षाएँ :–

1. छठी कक्षा	सीता रामयाद पुरस्कार		1000 रुपये
2. प्रवेशिका	सीताराम नारायण	"	1200 "
3. परिचय	लक्ष्मी देवीदिन	"	1500 "
4. प्रथमा	अनिरूद्ध द्वारका	"	2000 "
5. मध्यमा	श्रीनिवास जगदत्त + झगरू मधु शिल्ड	"	3000 "
6. साहित्य रत्न	रामदास रामलखन + सत्यदेव प्रीतम शिल्ड	"	4000 "

प्रतियोगिताएँ :–

1. कविता वाचन — हरिनारायण सीता पुरस्कार प्रथम –3000 रुपये + राजलक्ष्मी रोशनी शिल्ड
   द्वितीय–2000 "
   तृतीय –1000 "
   चौथे से दसवें स्थान तक के लिए सांत्वना पुरस्कार – 500 "
2. श्रुतिलेख — रोहिनी रामरूप पुरस्कार प्रथम –1500 "
   द्वितीय –1000 "
   तृतीय – 500 "
3. निबंध — उमाशंकर गिरजानन पुरस्कार प्रथम – 4000 "
   द्वितीय – 3000 "
   तृतीय – 2000 "
   चौथे से दसवें स्थान तक के लिए सांत्वना पुरस्कार – 1000 "

इसके अलावा प्रति वर्ष दो हिंदी सेवियों को "हिंदी प्रचारिणी सभा सम्मान शिल्ड" दिये जाते हैं ।

इतिहास के पन्नों से .....

हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान

1936 – 1944	पं. बोलाराम मुक्ताराम चाटर्जी
1945 – 1946	पं. अनिरूद्ध द्वारका
1947 – 1950	श्री श्रीनिवास जगदत्त
1950 – 1951	पं. उमाशंकर गिरजानन
1952 – 1977	श्री जयनारायण रॉय
1978 – 1980	श्री देवपाल रघु
1981	श्री बुधराम परताब
1982 – 1985	श्री भोलानाथ शम्भु
1986 – 1987	पं. रविशंकर कौलेशर
1988 – 2012	श्री अजामिल माताबदल
2013 से अब तक	श्री यंतुदेव बुधु

हिंदी प्रचारिणी सभा के मंत्री

1935 – 1940	श्री रामलाल मंगर भगत
1941 – 1976	श्री सूर्यप्रसाद मंगर भगत
1977 – 1978	श्री देवपाल रघु
1979 – 1980	श्री सूर्य प्रसाद शम्भु
1981 – 1987	श्री अजामिल माताबदल
1988 – 1992	श्रीमती बिदवंती तीलक
1993 – 1996	श्री नूतन राजपोत
1997 से अब तक	श्री धनराज शम्भु

हिंदी प्रचारिणी सभा के कोषाध्यक्ष

1936 – 1947	श्री महावीर फुगुआ
1948 – 1952	पं. अनिरूद्ध द्वारका
1953 – 1956	श्री नंदकेश्वर मनराखन
1957 – 1974	पं. अनिरूद्ध द्वारका
1975	श्री सीताराम नारायण
1976 – 1980	श्री राजेश्वर घूरा
1981 – 1992	श्री नरेश रागेन
1993	श्री टहल रामदीन
1994 – 1998	श्री तेजनारायण मंगर
1999 – 2000	श्रीमती सत्यवती जगमोहन
2000 से अब तक	श्री टहल रामदीन

प्रथम कार्य-कारिणी समिति-सदस्य । (1936)

पं० बोलोराम मुक्ताराम चाटर्जी
श्री रघुनन्न रामरतन
श्री रामलाल मंगर
श्री सुरूज प्रसाद मंगर
श्री महावीर फागु
श्री रामगुण जिबसिया
श्री अनिरूद्ध द्वारका
श्री शिव प्रसाद जीऊलाल
श्री शिव शंकर सिंह घूरन (एम० बी० ई०)
श्री गरीबनवज़ सितोहल
श्री गिरिराज बखोरी
श्री जानकी प्रसाद लालमन
श्री बृजलाल धनपत
श्री गणेश रामफल
श्री नन्केश्वर मनबहाल
श्री राम सुन्दर चमन

इन संस्थापक-सदस्यों में श्री बृजलाल धनपत जी आज भी जीवित हैं । वे अब १०३ वर्ष के हैं और वे हिंदी प्रचारिणी सभा के मान्य प्रधान भी हैं ।

सम्मेलन-परीक्षा 2015 के प्रथम दस में स्थान प्राप्त छात्रों के नाम

परिचय	नाम		पता
1.	गुणशाली	मधु	मोंताईं ब्लाँश
2.	अभिषेक	सोतचर्ण	देपीने
3.	कीर्तिदा राधा	मोतबार	कात्र बोर्न
4.	हीरदर्शी	झल्लू	काँ दे मास्क पावे
5.	लवना देवी	रामदेवर	मोर्समाँ सें तान्द्रे
6.	दिव्यता देवी	ओलम	ला रोज़ा
7.	शिवनीता	लछमी	लालमाटी
8.	दीपशिखा	ओबिलाखू	ब्रिज़े वेरदियेर
9.	मित्रविन्दा देवी	रामशरण	युनियन पार्क
10.	मनीषा रानी	तुलवा	सेंट्रल फ्लाक

प्रथमा	नाम		पता
1.	क्षितिज प्रभाकर	मोतिया	गुड लेंस
2.	लखिलेश कुमार	मोथोरी	फों जी साक
3.	सदुशा	दौलत	ला फ्लोरा
4.	तोयेशी	रामाशीर	कारो लालियान
5.	हिरेशी	द्वारकन	वाक्वा
6.	उदय सिंह	उदित	बारलो
7.	जयशील यशवीर	हरनोम	त्रिओले
8.	वृशन	लालमोन	पाम्प्लेमूस
9.	आशना	खादा	कोतेज
10.	जानवी देवी	भूनाय	न्यू ग्रोव

मध्यमा	नाम		पता
1.	पेतिना	दुखी	रिव्येर जी राँपार
2.	ताश्विनी	उजूधा	सें जुलियें दोत्माँ
3.	भावना	जगरनाथ	सेबासतोपोल
4.	तृषा देवी	दुव्हुआ	क्वीन विक्तोरिया
5.	जनिष्ठा शिवांगी	गोकुलसिंह	वाक्वा
6.	नैनिका	साहाय	बोनाकेई
7.	दर्शिता	दुर्गा	गोकुला
8.	झतेश्वरी	गौर	लेसपेराँस त्रेबुशे
9.	इम्नेश	झोमल	वालेता
10.	ज्ञानेश्वरी	सिभजन	पेची राफ्रे

उत्तमा (साहित्य रत्न)	नाम		पता
1.	केशव	पुराहू	लेसकालिए
2.	प्रिया	मोहंगुआ	मार ला शो
3.	वेशिका	जगरनाथ	लालूसी राँय
4.	शिक्षा	धनपत	वाक्वा
5.	गायत्री	चतरधारी	कालबास
6.	संदीप कौर	दूली	लेसकालिए
7.	लता देवी	बेचू	पोस्त दे फ्लाक
8.	परमेश्वरी	वुजागीर	रोस बेल
9.	किमी	नरसू	महेबर्ग
10.	गीतिका	सिबारथ	मार ताबा